Vol 6 Issue 7 August 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 7 | August - 2016

Indian Streams Research Journal

मतदान व्यवहार तथा जातियों का राजनीतिकरण की समीक्षा

सुरेन्द्र कुमार
पीएच.डी. शोधार्थी , लोक विकास एंव अनुसंधान ट्रस्ट,स्नेहलतागंज इन्दौर म,प्र, सम्बद्ध देवी अहिल्या विश्वविघायलय इन्दौर म,प्र,

जनप्रतिनिधि तथा समाज के समाजिक ठेकेदारों एवं मंत्रीगण चाहे कितना भी विश्वास दिलाते रहे पर ग्रामीण भारत की बहुसंख्यक आम जनता के लिये, समाजवाद, उदारवाद की उदारता मूल्य विहिन होते रहे।

प्रस्तावना–

मतदान व्यवहार तथा जातियों के राजनीतिकरण की प्रक्रिया में राजनीतिकरण अहम भूमिका निभाती रही है। चाहे वे वोट की राजनीति के लिये आम मतदाताओं की बात हो या जातियों की इन दोनों में राजनीतिकरण की बात सामने आती है। इस राजनीतिकरण के विकास की प्रक्रिया के मध्य एक नये विषय की उत्पत्ति हुई है जिसे हम ''अंक गणितीय राजनीतिकरण'' के नाम से पुकार सकते हैं। इस राजनैतिकीकरण के विकास की प्रक्रिया के चक्र में अंक गणितीय राजनीतिकरण की विशेष भूमिका रही है। जो कि सभी निर्वाचन से पूर्व स्पष्ट रूप से प्रतीत होते रहे हैं। जैसे कि किन क्षेत्रों में किस जाति विशेष की कितनी संख्या है उसी आधार पर लगभग सभी उम्मीदवार अपनी उम्मीदवारी निश्चित करते रहे हैं। यहाँ तक की सरकार के गठन में वोट की राजनीति को प्रभावित करने के लिये समय–समय पर मंत्रीमण्डल के विस्तार में बातें देखने को मिलती रही हैं। इन सभी बातों का मतदान व्यवहार राजनीतिक भागीदारी तथा जातियों के राजनीतिकरण के फलस्वरूप ही हुई है। दूसरी तरफ कुछ लोग जातियों का रोना रोते रहे हैं। वे लोग कभी नहीं चाहते हैं कि मतदान प्रतिशत में कमी हो पर वे लोग यह चाहते हैं कि, इन जातियों का राजनीतिकरण तथा राजनीति सहभागिता न हो यदि हो भी तो एक निश्चित दायरे में ही हो। उन लोगों का हमेशा से यह सोच रही है कि राजनीति का जातिकरण हो जिससे ये जातियाँ आपस में छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित हों और समभ्रान्त उच्चवर्गीय परिवार हमेशा की तरह अल्पसंख्यक होते हुए सभी स्थानों पर प्रभावी रहें। अर्थात् अल्पसंख्यक का बहुसंख्यक के ऊपर समभ्रान्त वर्ग के द्वारा शासन संचालित होते रहें। राजनीति के राजनीतिकरण में मतदान जाति के महत्वपूर्ण कारक के रूप में जाना जाता रहा है। वे चाहे भारतीय जनतन्त्र हों या अन्य देशों का जनतन्त्र हो ये सभी स्थानों पर विद्यमान हैं किन्तु अलग–अलग स्थानों पर इसके रूप अलग–अलग हो सकते हैं।

भारतीय जनतंत्र के संदर्भ में जाति पर अधिक बाल आचार्य मनु के द्वारा लिखित ''मनुस्मृति'' में उल्लेख मिलता है। यहाँ पर तो राजनीति का जातिकरण के कुछ प्रमाण मिलते हैं पर आगे चलकर सन् 1930 में प्रथम गोल मेज सम्मेलन में डॉ. अम्बेडकर के द्वारा लन्दन में जातियों के राजनीतिकरण तथा मताधिकार की बात को बहुत ही प्रबलता के साथ उठाया गया था जिसके फलस्वरूप मण्डल कमीशन की सिफारिशें सच्चर कमेटी की सिफारिशें आदि के कुछ भाग को लागू होते ही भारतीय राजनीति के जनतन्त्र में बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिला। यहीं से दलित व अन्य पिछड़ा वर्ग अल्पसंख्यके वर्ग के लोगों के ध्रुवीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता देखने को मिलती रही जो आज भी देखी जा सकती है। जातियों के राजनीतिकरण के पूर्व में उच्चवर्गीय वर्ग के लोग, निम्न वर्गीय (दलित, पिछड़ा व अल्पसंख्यक) संख्या बाहुल्य ग्रामों में पंच, सरपंच, (ग्राम प्रधान) संस्था प्रमुख, अगुवा विधायक, सांसद हुआ करते थे किन्तु सत्ता पर आज भी वही लोग अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी हैं। जातिय के राजनीतिकरण व राजनीतिक सत्ता की सहभागिता के द्वारा इस निम्नवर्गीय (जाति, समूह, व समुदाय) के लोगों में राजनीतिक समझदारी का विकास हुआ है। जब इन निम्न वर्गीय (दलित, अन्य पिछड़ा वर्ग अल्पसंख्यक) के लोगों ने स्वयं के मताधिकार के द्वारा मतदान की निर्वाचन प्रणाली की प्रक्रिया में उपस्थिति दर्ज कराई उसी समय भारतीय राजनीति में एक नये कारक की उत्तपत्ति हुई जिसे हम लोग पर जातिवाद राजनीति के नाम से पुकारते हैं। यह जातिवादी राजनीतिक शब्द नया नहीं बल्कि जातियों के राजनीतिकरण का बदला स्वरूप है और कुछ नहीं। इस जातिवादी राजनीतिक शब्द के उत्तपत्ति के बारे में गहराई से अवलोकन किया जाय तो यह निष्कर्ष निकलता है कि, ''जातिवादी राजनीति'' शब्द के पीछे समाज के समभ्रान्त धनिक वर्ग के लोगों की सोच से गढ़ा हुआ शब्द है। इसी शब्द के माध्यम से जातीय जनगणना व धार्मिक, आर्थिक जनगणना के आँकड़ों को प्राप्त करना है। जिससे समभ्रान्त (धनिक वर्ग) के लोगों को जातियों के शक्ति को लेकर शातिराना खतरा प्रतीत होता है। इस खतरे को खत्म करने के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण व क्रीमिलेयर जैसे राजनीतिक मुद्दों का निर्माण करते रहे हैं जो कि, समभ्रान्त वर्ग तथा मनुवादी मीडिया के कुछ लोगों की प्राथमिक सोच है जिसके सहयोगी उच्चवर्गीय लोग होते हैं जो चुनावों के दौरान दिखाई नहीं देती है। अतः मतदान व्यवहार राजनीतिक भागीदारी तथा जातियों के राजनीतिकरण के कारण दलित अन्य पिछड़ा तथा अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों में

नेतृत्व में नये समीकरण का निर्माण हुआ है। आज भी वोट की राजनीति दलित तथा अन्य पिछड़ा वर्ग अल्पसंख्यक के बीच केन्द्रित होती जा रही है। नये समीकरण के ध्रुवीकरण के द्वारा नये–नये गठजोड़ का निर्माण होते रहे हैं। जैसे DAP दलित अन्य पिछड़ावर्ग, DAM दलित अन्य अल्पसंख्यक मुस्लिम, मुस्लिम–यादव (MY) आदि जैसे नेतृत्व का विनिर्माण हुआ है जो जातियों के आपसी ध्रुवीकरण की प्रक्रिया–जारी है ये अंकगणीतीय राजनीति विषय के अंतर्गत देखा जा सकता है। जातियों के आपसी ध्रुवीकरण को समाज के संभ्रान्त (धनिक) वर्ग के लोग कभी नहीं स्वीकारते हैं। रही–सही कमी को साहित्यकारों, राजनीतियों तथा उच्च शिक्षित किस्म के लोगों द्वारा पूरा कर दिया जाता है। जैसा कि, अभी हाल के दिनों में अनेक ऐसे शब्दों के द्वारा भारतीय राजनीति में भूचाल मचा रखा था जिससे लगभग सभी लोग वाक़िफ हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक सन्तुलन को व्यावहारिक तौर पर सभी राजनीतिक पार्टियाँ व अन्य इकाईयाँ भी अल्पजन (धनिक) तन्त्र के नक्शे कदम पर चल कर स्वयं को स्थापित करती रही है। जातियों के राजनीतिकरण से आये क्रान्तिकारी बदल को समाप्त करना चाहते हैं। जिस प्रकार से अल्पजन (धनिक) वर्ग के लोग विभिन्न राजनैतिक पार्टियों, संस्थाओं, विभागों यहाँ तक की सचिवालय से शौचालय तक स्वयं को स्थापित कर लिया है। वोट की राजनीति व अपनी मनुवादी मानसिकता को छुपाने के लिये दलित व पिछड़े वर्ग के चापलूस व चमचागिरी करने वाले किस्म के लोगों को वैचारिकता संघ में शामिल कर लेते हैं। किन्तु जब संस्था प्रमुख योजना के रणनीतिकार व सलाहाकार की बात आती है तो इन जाति समूह के लागों को इगनोर कर दिया जाता है। आये दिन यह सुनने को मिलता रहा है कि, प्रत्येक राजनैतिक पार्टियाँ व समाज के सम्मानित विद्ववानों के द्वारा ही सामाजिक जाति के बन्धन को समाप्त कर दिया जाना चाहिए तो वहाँ पर राजनीतिक षडयंत्र की बु आती है क्योंकि यही लोग जब सामाजिक संबंध बनाने का समय आता है तो लोगों की आर्थिक हैसियत को देखते हुए फिर संबंध (वैवाहिक) स्थापित करते हैं फिर कहा जाता है इन लोगों की सामाजिक व जातीय सोच इस प्रकार से नये जातिवाद की उत्तपत्ति कर लेते हैं। वोट को प्राप्त करने के लिये जातिवादी कार्ड तथा संबंध (वैवाहिक) में आर्थिक कार्ड खेलते हैं। यही राजनीतिक कार्ड आगे चलकर आर्थिक जातिवाद के रूप में परिवर्तित हो जाता है इस प्रकार से इस तथ्य को नज़र अन्दाज नहीं किया जा सकता है जो कि कटु सत्य ळें इस प्रकार के मतदान व्यवहार तथा जातियों का राजनीतिकरण की समीक्षा करने पर यह निष्कर्ष मिलता है कि, भारत जैसे जनतान्त्रिक देश में कभी राजनीति का जातिकरण होता है तो कभी जातियों का राजनीतिकरण होता है। अन्तर सिर्फ इतना है कि जब अल्पतन्त्र (धनिक) वर्ग के ऊपर संकट आता है तो यह बोला जाता है कि राजनीति में जातिवाद प्रभावी होता जा रहा है किन्तु जब बहुसंख्यक वर्ग (जनतन्त्र) की बात आती है तो यही लोग नैतिकता, भ्रष्टाचार, पार्टीवाद, वंशवाद जैसे शब्दों को उठा कर बहुसंख्यक वर्ग के ध्यान को भ्रमित करते रहे हैं।

।। संदर्भ ।।

1.Democratic Politcs and Social Change in India crisis and opportunities, By Rajni Kothari, Pubi New Delhi Alled]1976.

2.A Survey Research in Political Science Vol II Political Process] New Delhi Allied, 1981

3.A Survey Research in Political Science Vol I Political System, New Delhi, Allied] 1979

4.Terrorism and Political Violence, A Source Book. M.L. Ed. New Delhi, Har Anand] Allied] 2000

5.राजनीतिक समाजशास्त्र की रूपरेखा, लेखक, शशी शर्मा, प्रा. पी.एच. लर्निंग प्रा. लि. नई दिल्ली, 2010

6.भारत में राजनीति कल और आज, लेखक, रजनी कोठारी, प्रकाशन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

7.भारतीय राजनीति विसंगतियाँ और दिशाहिनता, लेखक, सत्य मित्र दुबे, यश पब्लिकेशन्स,दिल्ली, 2010

8.फ्राम मेजारिटी टू माईनारिटी्ज रूल मेकिंग सेन्स ऑफ न्यू इन्डियन पॉलिटिक्स, सम्पादित पुस्तक इन्डिया ब्रीफिंग (सम्माः मार्शल एम ब्राउटन तथा फिलिप ओल्डेन वर्ग) लेखक, अतुल कोहली, प्रकाशन, वेस्ट न्यू प्रेश, 1990

9.कास्ट लैण्ड एण्ड पोलिटिकल पॉवर इन यू.पी.,लेखक,इम्तियाज अहमद तथा एन.सी. सक्सेना सम्पादित पुस्तक कास्ट एण्ड क्लास इन इण्डिया सम्पादक के.एल. शर्मा, प्रकाशन,रावत प्रकाशन,नईदिल्ली, 1995

10.द पॉलिटिक्स कल्चरल नेशनलिज्म, लेखक, एम.आर. वारनेट, प्रकाशन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन, 1974

11.भारतीय राजनीति के विरोधाभाष पिछड़ा अभिजन वर्ग, प्रगतिशील सामान्य वर्ग, लेखक, नलिनी कान्त झा, शोधार्थी जर्नल, प्रकाशन, सी. एस.डी. एस. नई दिल्ली, 2014

12.दलित एसर्शन थ्रू इलेक्ट्रोल पॉलिटिक्स, लेखक, पुष्पेन्द्र प्रा. इकानॉमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली सितम्बर 14–10, 1999

13.द वी.एस.पी. इन यू.पी., लेखक, सुधा पई सेमिनार नं. 471 नवम्बर, 1998

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org